वर्तमान विश्व में बौद्ध धर्म की महत्त्ता और उत्तरदायित्व

ईसा पूर्व की छठी शताब्दी का भारत के धार्मिक इतिहास में विशिष्ट स्थान है, क्योंकि इस शताब्दी में धर्म के क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन हुए, जिनका समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा था। इस शताब्दी में हुए धार्मिक परिवर्तनों के कारण ही इस काल को बौद्धिक एवं धार्मिक क्रांति का युग कहा जाता है। एक महत्त्वपूर्ण एवं रूचिकर तथ्य यह है कि धार्मिक मामलों में परिवर्तन मात्र भारत में ही नहीं वरन् विश्व के अनेक देशों में भी हुआ था। ईरान में जरथ्रुस्त्र, चीन में कन्फ्यूशियस, यूनान में हिराक्लिट्स आदि विद्वानों ने अपने-अपने देशों में अपने नवीन विचार प्रस्तुत कर परम्परावादी विचारधारा पर कुठाराघात किया। इन देशों में हुई क्रांतियों में पूर्णतया समानता नहीं थी तथा प्रत्येक के स्वरूप भिन्न-भिन्न थे। भारत में हुई क्राति का स्वरूप मात्र धार्मिक ही नहीं वरन् सामाजिक एवं सांस्कृतिक भी था। भारत में इस क्रांति का केन्द्र मगध था। उपनिषदों ने इस क्रांति के पूर्व ही जटिल कर्मकाण्ड तथा खूनी यज्ञों के विरूद्ध विद्रोह कर दिया था। डॉ. गोखले ने लिखा है, ''छठी शताब्दी ई.पू. को, जिस काल में कुछ उपनिषद् संकलित किए जा रहे थे, बौद्धिक उत्तेजना का युग ठीक ही कहा गया है। चारों ओर शंकाएं फैली हुई थीं और भारत के प्रत्येक व्यक्ति के मस्तिष्क में क्रांतिकारी विचार आंदोलित हो रहे थे।''

इस आंदोलन के फलस्वरूप भारत में दो नए धर्मों का उदय हुआ, जिसमें जैन-धर्म और बौद्ध-धर्म आते हैं। बौद्ध-धर्म के संस्थापक, विश्व के प्रमुख धर्म-सुधारकों एवं दार्शनिकों में से एक थे, महात्मा बुद्ध।

महात्मा बुद्ध प्रमुखतः एक धर्म सुधारक थे। यदि गहराई से विश्लेषण किया जाय तो पता चलेगा कि महात्मा बुद्ध ने किसी नवीन धर्म की स्थापना के स्थान पर प्राचीन धर्म में चली आ रही कुरीतियों को दूर करने का प्रयत्न किया था। महात्मा बुद्ध का धर्म अत्यंत व्यावहारिक था। जिस कारण यह सिर्फ भारत ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण एशिया में प्रसरित हुआ।

''एशिया का प्रकाश- महात्मा बुद्ध''

महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं ने न सिर्फ भारत को वरन् सम्पूर्ण एशिया के सभी देशों को प्रभावित किया। यही कारण है कि बुद्ध को 'एशिया का प्रकाश' कहा जाता है। इस्लाम व ईसाइयत के उद्‍भव से पूर्व यह बौद्ध-धर्म सम्पूर्ण एशिया के देशों में अपनी प्रभा बिखेर रहा था। जिस प्रकार दक्षिण एशिया में कभी शिव जी ने ईश्वरत्व के उच्चतर शिखर को प्राप्त किया था, बुद्ध भी उस उच्चतर स्तर को पहुँचे। विश्व के लगभग सभी धर्मों को प्रभावित करने वाला बौद्ध-धर्म भारत में इस्लाम के प्रवेश के साथ ही धीरे-धीरे समाप्त होने लगा। और आज जब सम्पूर्ण संसार युद्ध और लड़ाइयों से जर्जर होकर ढ़हने की कगार की ओर बढ़ रहा है तो वह पूर्णः बौद्ध-धर्म की ओर नजरें लगाये बैठा है कि संसार को अहिंसा

और शांति का मार्ग दिखाने वाला फिर कृपा करेगा और विश्व को मानवता के उच्चतर आदर्शों की ओर प्रेषित करेगा।

बौद्ध-धर्म के प्रमुख सिद्धांत

1. चार आर्य सत्य-महात्मा बुद्ध ने सारनाथ में अपने जीवन के प्रथम उपदेश में अपनी समस्त शिक्षाओं का सार प्रस्तुत किया।

   ''मैं बराबर दो ही मुख्य उपदेश देता आया हूँ- दु:ख और दु:ख निरोध।''

   अत: इस दु:ख से मुक्त होने के लिए उन्होंने चार आर्य सत्यों व आष्टांगिक मार्ग का पालन करने के लिए कहा। इसी आधार पर रीज डेविड्स का कहना है कि चार आर्य सत्य एवं आष्टांगिक मार्ग में ही बौद्ध-धर्म का सार निहित है। बौद्ध-धर्म के चार आर्य सत्य इस प्रकार हैं-

(क) दु:ख ही दु:ख

(ख) दु:ख का कारण है

(ग) दु:ख निरोध

(घ) दु:ख निरोध मार्ग

2. आष्टांगिक मार्ग- दु:खों से मुक्ति अर्थात् निर्वाण प्राप्त करने के लिए बौद्ध-धर्म में आष्टांगिक मार्ग बताया गया है-

1. सम्यक् दृष्टि

2. सम्यक् संकल्प

3. सम्यक् वाक्

4. सम्यक् कर्मान्त

5. सम्यक् आजीविका

6. सम्यक् व्यायाम

7. सम्यक् स्मृति

8. सम्यक् समाधि

3. मध्यम मार्ग– महात्मा बुद्ध ने ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् इस बात को स्वीकार किया कि निर्वाण अर्थात् दु:खों से मुक्ति प्राप्त करने के लिए कठोर तपस्या करना व शरीर को कष्ट देना आवश्यक नहीं है। ज्ञान प्राप्त करने अथवा निर्वाण प्राप्त करने के लिए उपरोक्त दोनों रास्तों के मध्य का रास्ता उचित है। अत: उन्होंने मज्झिम प्रतिपदा पर चलने का अनुरोध किया।

4. सदाचारी जीवन– महात्मा बुद्ध ने नैतिक मूल्यों पर अत्यधिक बल दिया। महात्मा बुद्ध का विचार था कि निर्वाण की ओर अग्रसर होने के लिए मनुष्य को सदाचार का पालन करना चाहिए। उनके सदाचार के दस नियम निम्नलिखित हैं–

1. अहिंसा 2. सत्य 3. अस्तेय (चोरी न करना) 4. अपरिग्रह (सम्पत्ति का त्याग) 5. ब्रह्मचर्य 6. नृत्य, गान व मादक वस्तुओं का त्याग 7. सुगंधित वस्तुओं का परित्याग 8. असमय भोजन न करना 9. कोमल बिस्तर का त्याग 10. धन का त्याग।

5. अहिंसा-भगवान् बुद्ध अहिंसा के पुरजोर समर्थक एवं हिंसा के घोर विरोधी थे। ब्राह्मणीय कर्मकाण्ड, विशेष रूप से पशु-बलि, अस्वीकार्य था। जीव-हत्या या बलि का इन्होंने बहिष्कार किया था।

6. कर्म और पुनर्जन्म का सिद्धांत- बौद्ध-धर्म कर्म-प्रधान है। महात्मा बुद्ध का विचार था कि मनुष्य जैसा कर्म करता है वैसा ही उसे फल भोगना पड़ता है। अच्छे कर्मों से निर्वाण प्राप्त होता है व पापों से मुक्ति मिल जाती है, तर्क और विवेक के तत्त्वों पर जोर देने में बुद्ध अपने समय के दार्शनिक रूचि के कुछ विषयों को भी प्रतिबिंधित कर रहे थे। पुनर्जन्मों के चक्र से मुक्ति का अर्थ था निर्वाण। यद्यपि बुद्ध ने आत्मा के अस्तित्व से इन्कार कर दिया। उनके अनुसार, जो कायम रहती थी वह मात्र चेतना थी, जिसे धर्म द्वारा इच्छित रूप दिया जा सकता था। आत्मा की अस्वीकृति ने कर्म और पुनर्जन्म के बौद्ध सिद्धांत को एक अलग किस्म की धार दे दी। चार आर्य सत्यों में अवयक्त रूप से कर्म की कल्पना विद्यमान है, जिसका इच्छा और दुःख से कारण-कार्य संबंध है।

7. अनात्मवाद-बुद्ध आत्मा में विश्वास नहीं रखते थे। उनका विश्वास था कि शरीर अलग-अलग तत्त्वों से मिलकर बना है। मृत्यु के पश्चात् ये तत्त्व अलग-अलग हो जाते हैं। डॉ. बाशम के अनुसार, ''अतएव हीनयान बौद्ध-धर्म का एक ऐसा धर्म है जिसमें न कोई देवता है और न कोई आत्मा।''

8. वेदों में अविश्वास व जाति-प्रथा का विरोध- बुद्ध की शिक्षा अंशतः प्रारंभिक उपनिषदों के विमर्श का उत्तर थी, जिसमें उनके कुछ विचारों से सहमति की गई और कुछ से असहमति। असहमतियां मामूली नहीं थी। लेकिन बुद्ध की शिक्षा वैदिक साहित्य की शिक्षा का त्याग थी और साथ ही उस काल के ऐतिहासिक परिवर्तनों का एक उत्तर थी।

ब्राह्मणीय विचार के विपरीत, कर्म की बौद्ध कल्पना वर्ण-आधारित समाज के नियमों से बंधी हुई नहीं थी और न सामाजिक, नैतिकता का पैमाना वर्ण के नियम थे। श्रेष्ठतर जन्म सुनिश्चित करने के लिए कर्म में सुधार सामाजिक नैतिकता के नियमों के पालन पर निर्भर था और नैतिकता के इन नियमों का आधार ब्राह्मणीय पाठों के रचनाकारों द्वारा निर्धारित पवित्र कर्तव्यों के नियम नहीं बल्कि आष्टांगिक मार्ग था। बुद्ध ने जाति के उन्मूलन की कल्पना नहीं की, क्योंकि उसके लिए समाज के आमूल पुनःर्विन्यास की आवश्यकता पड़ती।

9. अनीश्वरवाद- बौद्ध धर्म ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करता। इसके अनुसार विश्व की उत्पत्ति के लिए ईश्वर की आवश्यकता नहीं है वरन् कर्म-कारण की शृंखला से विश्व चलता रहता है। वस्तुतः कर्मवादी होने के कारण गौतम बुद्ध ईश्वर संबंधी दार्शनिक विवादों में नहीं पड़े। महात्मा बुद्ध का मानना था कि जिन विषयों के समाधान के लिए पर्याप्त प्रमाण न मिले उनके समाधान की चेष्टा करना व्यर्थ है।

10. क्षणिकवाद- संसार के विषय में महात्मा बुद्ध के दर्शन को क्षणिकवाद कहा गया है। इस दर्शन के अनुसार संसार की प्रत्येक वस्तु क्षणिक है तथा उसमें सदैव परिवर्तन होता रहता है। महात्मा बुद्ध का विचार था कि किसी भी वस्तु की उत्पत्ति किसी कारण से होती है, अतः कारण के नष्ट होने पर उस वस्तु का नाश हो जाता है, उनके अनुसार, ''जो नित्य एवं स्थायी प्रतीत होता है वह भी विनाशी है। जो महान प्रतीत होता है उसका भी पतन है, जहाँ संयोग है वहाँ वियोग भी है, जहाँ जन्म है वहाँ मरण भी है।''

11. निर्वाण- बौद्ध-धर्म का अन्तिम लक्ष्य निर्वाण है। निर्वाण का अर्थ अज्ञान रूपी अंधकार का दूर होना है तथा ज्ञानयुक्त परमसुख की स्थिति में पहुँचना है।

12. भिक्षुणी संघ- स्त्रियों के लिए संघ की स्थापना एक महत्त्वपूर्ण नवोन्मेष था, क्योंकि धर्मसूत्रों में स्त्रियों पर अधिकारिक मर्यादाएं थोपी जा रही थीं।

स्त्रियों को विवाह–नियमों की अधीनता न मानते हुए अन्य प्रकार से अपने जीवन को दिशा देने की स्वतंत्रता प्रदान की गई वह भी अव्यक्त रूप से जाति–व्यवस्था एवं सामाजिक–व्यवस्था में महिलाओं को सम्मान जनक स्थिति प्रदान करने के लिए ही था। वेश्याओं और गणिकाओं को सम्मान दिया गया और उनसे दान स्वीकार किए जाने लगे जो वैदिक ब्राह्मणीय धर्म से बिल्कुल ही विपरीत था। भिक्षुणियों द्वारा रचित कविताएं और प्रार्थनाएं, जिनका संकलन थेरीगाथा के रूप में किया गया, स्त्रियों के वस्तु–बोधों की संवेदनशील व्याख्याएं प्रस्तुत करती हैं। स्त्रियों को पहली बार धार्मिक व सामाजिक रूप में स्वतंत्रता प्राप्त हुई। यह बिल्कुल ही नया प्रयोग था।

भगवान बुद्ध के कर्म संबंधी विश्वास का एक विशेष समाजशास्त्रीय महत्त्व है, क्योंकि वह व्यक्ति के अपने कर्म को उसके जन्म (जाति) से अधिक महत्त्व देता है। अशोक महान् के शासन काल में बौद्ध–धर्म यद्यपि 18 सम्प्रदायों और निकायों में विभक्त था, फिर भी वह इसी समय, उसके राज्याश्रय में न केवल एक अखिल भारतीय, बल्कि एक विश्व–धर्म ही बन गया। बौद्ध धर्म का जो उत्तरी देशों, यथा–अफगनिस्तान, चीनी तुर्किस्तान (मध्य एशिया), चीन, तिब्बत, मंगोलिया, नेपाल, कोरिया और जापान में तथा दक्षिणी देशों यथा– सिंहल (श्रीलंका), बर्मा, थाइदेश, कम्बोडिया, वियतनाम (चंपा), मलाया और इंण्डोनेशिया में प्रचार हुआ, उसके संबंध में भी एक विच्छेदक चर्चा करनी चाहिए।

पालि त्रिपिटक साहित्य विश्व के अनेकों भाषाओं में अनुवादित हैं जो विश्व-साहित्य को समृद्ध करते हैं- पालि, संस्कृत, तिब्बती, चीनी, कोरियन, जापानी, बर्मी, सिंहली आदि। बौद्ध शिक्षा पद्धति में विहार-विद्यालय या संघाराम-विद्यालय से महाविहार या विश्वविद्यालय के रूप में बौद्ध-बौद्धेतर, भारतीय, विदेशी सबके लिए ज्ञान और दर्शन प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त हुआ। नालंदा, ओदंतपुरी, जगद्लपुरी एवं विक्रमशिला आज भी अपनी समृद्धि को भूला नहीं सकते। सम्राट अशोक, मिनांदर, कनिष्क एवं हर्ष तथा पाल शासकों का योगदान विश्व को रणभेरी के बजाय धम्म-विजय से जीतना, कोई सामान्य बात नहीं हो सकती। महान चीनी यात्री फाहियान, युआन-च्वांग और इत्सिंग की भारत यात्रा इसकी मानवतावादी शिक्षाओं की ही जीत है। वास्तुकला (स्तूप एवं चैत्य), मूर्तिकला (गांधार, मथुरा, अमरावती) और चित्रकला (अजंता-एलोरा, जावा) आदि उच्चतम मानवीय संवदेना एवं करूणा को प्रकट करते हैं।

महाभारत में मनुष्य के व्यक्तिगत सदाचार के महत्त्व की प्रशंसा की गयी है, और आर्य-आष्टांगिक मार्ग का भी निर्देश है। बौद्ध देवताओं की प्रतिष्ठा हुई और स्वयं भगवान् बुद्ध विष्णु के अवतार माने गए।

एशिया के देशों मे बौद्ध-धर्म के प्रचार के साथ बौद्ध-संस्कृति का भी प्रचार हुआ। इन नए विचारों से इन देशों का जो लाभ हुआ, वह न केवल धर्म के क्षेत्र में था बल्कि संस्कृति के क्षेत्र में भी, जो अपने विस्तृत अर्थ में ''समाज के

एक सदस्य के रूप में मनुष्य के द्वारा अर्जित ज्ञान, विश्वास, कला, नीति, विधि और अन्य समर्थताओं और स्वभावों की युग्मित समष्टि है।''

बौद्ध धर्म विश्व में शांति के लिए एक महान् शक्ति सिद्ध हुआ है। भगवान बुद्ध की शंति आत्म-बलिदान, करुणा और उदारता संबंधी-नीति महाभारत की इन पंक्तियों में प्रतिध्वनित हुई है

अक्रोधेन जयेत क्रोधं, असाधुं साधुना जयेत।

जयेत् कदर्यं दानेन, जयेत् सत्येन चानृतम्॥

(क्रोध को अक्रोध से जीतें और बुरे को भले से। कंजूस को दान से और असत्य को सत्य से जय करें।)

बौद्ध-धर्म का विश्व-संस्कृति को देन

बौद्ध धर्म का भारतीय संस्कृति पर व्यापक प्रभाव पड़ा। भारतीय संस्कृति के प्रत्येक क्षेत्र में इसने अमिट छाप छोड़ी। यद्यपि बौद्ध धर्म कुछ समय के लिए भारत से स्वयं विलुप्त हो गया किन्तु इसका व्यापक प्रभाव भारतीय व विश्व-संस्कृति पर पड़ा। बौद्ध धर्म ने अहिंसा, सहिष्णुता, परोपकार, दया व मानव-कल्याण की भावनाओं को विकसित किया तथा इन्हें जाति-प्रथा का विरोध करना सिखाया। छठी शताब्दी ई.पू. जबकि जनमानस ब्राह्मण-धर्म के थोपे आदर्शों से असंतुष्ट होकर एक ऐसे धर्म की आवश्यकता महसूस कर रहा था जो उन्हें धार्मिक संतुष्टि प्रदान कर सके, तब महात्मा बुद्ध ने इसे प्रतिस्थापित कर जनमानस

की इच्छा की पूर्ति की थी। तत्कालीन स्थिति में ही नहीं आधुनिक युग में भी महात्मा बुद्ध की शिक्षाएँ बन्धुत्व व मानवतावादी होने के कारण विश्व में शांति स्थापित करने की क्षमता रखते हैं।

''जगत में बड़ी बड़ी विजयी जातियाँ हो चुकी हैं, हम भी महान् विजेता रह चुके हैं। हमारी विजय की कथा को भारत के महान् सम्राट अशोक ने धर्म और आध्यात्मिकता की ही विजय बताया है। भारत को फिर से जगत् पर विजय प्राप्त करनी होगी।'' - स्वामी विवेकानंद

1. साहित्यिक देन- बौद्ध धर्म ने साहित्य के कोष में अपार वृद्धि की है। बौद्ध संघ व विहार शिक्षा के केन्द्र थे और विभिन्न प्राचीन विश्वविद्यालयों में बौद्ध-धर्म का अध्ययन तथा उस पर आधारित साहित्य का सृजन किया गया। बौद्ध धर्म ने लोक भाषाओं के विकास में भी महत्त्वपूण योगदान दिया। पाली भाषा साहित्य, संस्कृत भाषा साहित्य, सिंहली, तिब्बती, चीनी भाषा साहित्य आदि।

2. दार्शनिक देन- बौद्ध धर्म ने बौद्धिक तथा विचारों की स्वतंत्रता पर विशेष बल दिया। महात्मा बुद्ध का विचार था कि ''आत्मदीप'' बनकर ही कार्य करना चाहिए। इस प्रकार स्वतंत्र विचारवादी बौद्ध-दार्शनिकों ने दर्शन-साहित्य का सृजन किया जिससे दर्शन तथा तर्कशास्त्र की उन्नति हुई। नाहर ने बौद्ध-धर्म से प्रभावित दर्शन के विषय में लिखा है, ''बौद्धों का

दार्शनिक साहित्य केवल प्रचुर और समृद्ध ही नहीं, अपितु विचारोत्तेजक भी था। स्वयं बौद्ध-धर्म के अन्तर्गत् ही अनेक दार्शनिक सम्प्रदाय उत्पन्न हो गए। प्रतीत्य-समुत्पाद, शून्यवाद, योगाचार, सर्वास्तिवाद, सौत्रांतिक, विज्ञानवाद और अनित्यवाद आदि। असंग, वसुमित्र, दिङ्नाग और धर्मकीर्ति आदि बौद्ध दार्शनिकों की कृतियों का अध्ययन किए बिना कोई भी व्यक्ति दर्शनशास्त्र का आचार्य नहीं कहा जा सकता। शंकराचार्य का भाग्यवाद नागार्जुन के शून्यवाद का ही प्रतिरूप माना जाता है।

3. कला को देन- बौद्ध धर्म का सर्वाधिक प्रभाव कला पर दृष्टिगोचर होता है। बौद्ध-कला के अन्तर्गत बनी कलाकृतियाँ सौंदर्य व निपुणता में अद्भूत रही हैं। कुछ इतिहासकार तो यहाँ तक मानते हैं कि मूर्ति-कला व शिल्प-कला का उद्भव ही बौद्ध धर्म के द्वारा हुआ। बौद्ध धर्म की एक मुख्य देन गुहा मंदिर व स्तूप है। सांची, भरहुत, अमरावती के स्तूप तथा सम्राट अशोक के शिला-स्तम्भों तथा कार्ले की बौद्ध-गुफाएं बौद्ध-धर्म की ही देन हैं। कोहेन ने लिखा है, ''सभी क्षेत्रों में चित्रकला में, वास्तुकला और कारीगरी में, बौद्ध धर्म ने ऐसी कलाकृतियों का निर्माण किया है जो पाश्चात्य कला की श्रेष्ठतम कृतियों के समक्ष रखी जा सकती हैं। भारत का राष्ट्रीय चिह्न सम्राट अशोक के स्तंभ से ली गयी है जो बौद्ध-धर्म की ही देन है।

4. संघों की स्थापना- संघ-व्यवस्था स्थापित करने का श्रेय बौद्ध-धर्म को ही है। बौद्धों ने अपने भिक्षुओं को संगठित जीवन व्यतीत करने के लिए प्रेरित

किया था। भारत में इससे पूर्व-संघ-व्यवस्था विद्यमान न थी। बौद्ध-संघों में भिक्षुओं को अनुशासन की शिक्षा दी जाती थी तथा तत्पश्चात् उन्हें प्रचार के लिए अन्य स्थानों पर भेजा जाता था। इन संघों ने जनसाधारण में लोकतंत्र की भावनाओं को जागृत किया क्योंकि इन संघों का आधार लोकतांत्रिक था।

5. भारतीय संस्कृति का प्रसार- बौद्ध धर्म की एक महान् देन भारतीय संस्कृति का अन्य देशों में प्रचार एवं प्रसार था। बौद्ध भिक्षु भारतीय धर्म एवं संस्कृति के प्रचार हेतु चीन, जापान, लंका, तिब्बत, बर्मा, जावा, सुमात्रा, कम्बोडिया आदि देशों में गए परिणामस्वरूप, विदेशों से भी विद्वान अपनी ज्ञान-पिपासा शांत करने के लिए भारत आने लगे। इस प्रकार भारत के अन्य देशों के साथ सांस्कृतिक सम्बंध स्थापित हुए तथा धीरे-धीरे इन देशों पर भारतीय संस्कृति का व्यापक प्रभाव हुआ। इन देशों के राजाओं व स्थानों के नाम भी भारतीयों के समान ही होने लगे। बौद्ध-धर्म यद्यपि भारत में कमजोर हुआ किंतु, लंका, बर्मा, चीन आदि देशों में ही नहीं कम्बोड़िया, मंगोलिया, जापान, कोरिया, भूटान आज भी बौद्ध धर्म का यशगान गाते हैं। ''एशिया का प्रकाश'' अर्थात् महात्मा बुद्ध, इसी कारण श्री वेदालंकार ने लिखा है ''वृहतर् भारत के निर्माण में बौद्धों ने सबसे अधिक सहायता दी।''

अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम्।

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥

भारत में तुर्कों के आगमन के साथ ही भारत से बौद्ध-धर्म समाप्त प्राय हो गया, नालंदा और विक्रमशिला जैसे महाविहार नष्ट कर दिये गए। शिक्षा और ज्ञान के स्त्रोत, पुस्तकें जला दी गयीं। अधिकतम भिक्षु मारे गये तथा कुछ तिब्बत, श्रीलंका और नेपाल को पलायन कर गए। 13 वीं सदी से लेकर 19 वीं सदी तक भारत में बौद्ध धर्म, हिन्दू धर्म का ही एक अंग बनकर चलता रहा, परंतु 20 वीं सदी में पुनः भारत में बौद्ध-धर्म का उत्थान होना शुरू हुआ। जिस दुनिया ने इन कालखंड़ों में 2 विश्वयुद्ध देखे, साथ-साथ लाखों मानवों की हत्या कर दी, तब पुनः उसे मानवता के उच्चतर आदर्शों की याद आयी और भारत में जन्में गाँधी के सत्याग्रह और अहिंसा से प्रेरणा लेनी शुरू की और 1947 में भारत का अंग्रेजों से मुक्ति के पश्चात् पुनश्च विश्व को शांति और अंहिसा का संदेश देने वाला पुरातन बौद्ध-धर्म फिर से एक नयी ऊर्जा व शक्ति के साथ विश्व को प्रकाशित करने को तैयार हुआ।

स्वामी विवेकानंद जैसे विश्व के आदर्श महापुरूषों ने भी बौद्ध-धर्म की महत्ता का गुणगान किया। सम्राट अशोक के 'धम्म-विजय' के उद्घोष से प्रेरित होकर भारत ने भी विश्व को आश्वस्त किया कि वह आक्रमणकारी न होकर विश्व को शांति और अहिंसा का संदेश देगा।

‘अहिंसा परमो धर्मः’’

आज जब दुनिया में धार्मिक उन्माद बढ़ता जा रहा है, लोग धर्मयुद्ध, जिहाद और क्रूसेड जैसे विचारों से प्रेरित होकर नस्लभेद, आतंकवाद और युद्धों का सहारा ले रहे हैं विशेषकर पश्चिम एशिया एवं अफ्रीका में वहीं भारत जैसे विश्व के महानतम लोकतंत्रवादी देश में नयी सरकार माननीय नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में विश्व को ‘धम्म-विजय’ का संदेश प्रेषित कर रही है। भारत युवाओं का देश है और भारत के युवा जो चाहते है वो करके दिखाते हैं, यह पूर्णतः भारत पर निर्भर करता है कि आज जब दुनिया को एक शांतिप्रिय और अहिंसक शक्तिशाली देश की जरूरत है जिसके नेतृत्व में, भारत जैसा देश ही जिसमें अग्रगण्य है यह विश्वास जतायी जा रही है कि मानवता व विश्व की रक्षा का नेतृत्व किसके हाथों में रहे और ऐसा सिर्फ भारत जैसा आध्यात्मिक देश की कर सकता है फलतः भारत सरकार बौद्ध-धर्म ही नहीं वरन् भारत के सभी धर्मों को संरक्षण दे रही है व उन्हें पुनःश्च विस्तारित होने को तैयार कर रही है विशेषकर बौद्ध धर्म को, जैसा कि सम्राट अशोक ने अपने काल-खंड में किया था, मुझे पूरा विश्वास है कि भारत ही बौद्ध धर्म की शिक्षाओं को साथ लेकर विश्व का मार्गदर्शन करेगा और विश्व के मानव समुदाय को आंतक से भयमुक्त कर आदर्श विश्व की शांतिमय, उन्नतिमय रूप में स्थापित करने में सहयोगी बन नेतृत्व करेगा।

संदर्भ- ग्रंथ

- बौद्ध धर्म के 2500 वर्ष-पी.वी बापट, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार
- भारत का इतिहास (650 ई. तक)- डॉ. ए. के मित्तल, साहित्य भवन प्रकाशन, आगरा
- पूर्वकालीन भारत- रोमिला थापर, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय
- भारत जागरण- स्वामी विवेकानंद, रामकृष्ण मिशन, नई दिल्ली
- बौद्ध धर्म- विकिपीड़िया
- बौद्ध दर्शन मीमांसा- आचार्य बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा विद्याभवन प्रकाशन, वाराणसी
- अशोक- विकिपीड़िया
- इरोम शर्मिला चानु पत्र- भारतीय प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी, भारत सरकार
- डी.न.ए.- 15 सितम्बर 2014
- हिन्दुस्तान टाइम्स- 10 जून 2014